ज्ञान मीमांसा
ज्ञान के स्रोत (अनुभववाद) B.A I (Hons) II Paper

अनुभववाद ज्ञान मीमांसा का वह सिद्धान्त है जिसके अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति अनुभव से होती है। इस मत के अनुसार अनुभव ही ज्ञान का एक मात्र साधन माना गया है। अनुभववाद बुद्धिवाद का पूर्ण विरोधी सिद्धान्त है।

अनुभववाद के अनुसार सम्पूर्ण ज्ञान अनुभवजन्य है। ज्ञान अनुभव के द्वारा प्राप्त होता है इसलिए कोई भी ज्ञान जन्मजात नहीं है इसलिए इन्हें अनुभव सापेक्ष ज्ञान भी कहा जाता है सभी ज्ञान जीवन काल में ही अर्जित होता है। अनुभव के द्वारा ही मस्तिष्क में विचार भी निर्मित होते हैं। अनुभववादी लॉक ने जन्मजात प्रत्ययों का जोरदार खण्डन किया है अनुभववाद बुद्धिवाद को विरुद्ध मानता है। इस सिद्धान्त के अनुसार नियमों की समष्टि है। ज्ञान का निर्माणक तत्व प्रत्यय है और प्रत्यय बुद्धि द्वारा उत्पन्न नहीं हो सकते।

अनुभववादी लॉक का कहना है कि जन्म के समय मस्तिष्क में कोई प्रत्यय या ज्ञान नहीं रहता है। जन्म के समय मस्तिष्क कोरा कागज की भाँति रहता है अनुभव का अर्थ है, मनुष्य की पाँच बाह्य इन्द्रियाँ आँख, नाक, कान, जीभ और त्वचा इसके अतिरिक्त मन को भी कुछ शुद्ध विचारक आन्तरिक इन्द्रियाँ मानते हैं।

इन्हीं इन्द्रियों द्वारा ज्ञान मस्तिष्क में प्राप्त अंकित होती है इसे अनुभव कहा जाता है।

ज्ञान के आदर्श विषय में अनुभववाद बुद्धिवाद से भिन्न है। बुद्धिवाद गणित विज्ञान को अपना आदर्श मानता किन्तु अनुभव वाद वस्तु भौतिक विज्ञान को आदर्श मानता है अनुभवजन्य ज्ञान सार्वभौम और अनिवार्य नहीं होता पर इसमें नवीनता का गुण विद्यमान रहता है। अनुभव वाद के अनुसार ज्ञान सम्भाव्य होता है, पूर्ण निश्चित नहीं।

पाश्चात्य दार्शनिक प्रोटागोरस अनुभव वाद के पहले समर्थक थे इनके अनुसार सिर्फ इन्द्रिय संवेदन ही ज्ञान का एकमात्र साधन है। लेकिन अनुभववाद का पूर्ण विकास लॉक, ह्यूम तथा बर्कले के दर्शन में देखने को मिलता है। लॉक के अनुसार इन्द्रिय संवेदन के अलावे किसी भी पदार्थ का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होता है। लॉक का मानना है कि सरल प्रत्यय का ज्ञान हम अनुभव से प्राप्त करते हैं। अनुभव दो प्रकार का होता है (1) संवेदन (2) अन्तः प्रेक्षण। संवेदन इन्द्रियों द्वारा होती है और आन्तरिक निरीक्षण को कहते हैं बर्कले महोदय लॉक के विचारों में संगति लाने का प्रयास किया है। और लॉक की त्रुटियों पर प्रकाश डाला है

ह्यूम बर्कले से भी आगे बढ़कर अनुभववाद में संगति लाया है। इनका कहना है कि जिस प्रकार भौतिक द्रव्यों को अनुभवगम्य होने के कारण बर्कले अस्वीकार किया गया है उसी प्रकार आत्मा और ईश्वर का भी अस्वीकार किया जा सकता है। ह्यूम भौतिक द्रव्य, आत्मा और ईश्वर तीनों का खण्डन करते हैं। इनके अनुसार सिर्फ प्रत्यक्ष ही वास्तविक है।

अन्ततः हम निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि चार्वाक के विषय में सार्वभौमिक एवं अनिवार्य व्याप्ति सम्भव नहीं है अनुमान ही ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन है इस अनुमान विधान के विषय में संदेह व्यक्ति करते हैं वे मानते हैं कि अनुमान विधान में सार्वभौमिक नहीं संभव है।

भारतीय दर्शन में चार्वाक दर्शन अनुभववाद का एक मात्र समर्थक है। चार्वाक के अनुसार प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन है। इनके अनुसार अनुमान, शब्द, उपमान प्रमाण ज्ञान भी नहीं दे सकते। चार्वाक सार्वभौमिक तथा अनिवार्य संबंध में विश्वास करते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि अनुभववादी ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन नहीं कहा जा सकता है।